श्री मधु लिमये (मुंगेर) : अध्यक्ष महोदय सबेरे जब हम अखबार में पढ़ते हैं तो बड़ा दुख होता है कि जो कुछ नोटिस हम देते हैं और उन को आप अस्वीकृत कर देते हैं, लेकिन वे ही राज्य सभा में स्वीकार होते हैं। अकाल के बारे में, हिन्द महासागर में फौजी अड्डा बनाने के बारे में . . .

अध्यक्ष महोदय : वह मैं ने नामंजूर कर दिया है ।

श्री मधु लिमये : राज्य सभा में यह सब होगा लेकिन जनता की यह जो प्रतिनिधि संस्था है उस में ये सारे मसले आने चाहियें नहीं आते हैं ।

अध्यक्ष महोदय : यह नहीं हो सकता है । उनके पास इतना काफी वक्त है कि वे ले लें, हमारे पास . . .

श्री मधु लिमये : यहां भी वक्त निकाल सकते हैं ।

अध्यक्ष महोदय : और नहीं निकल सकता है ।

श्री बड़े: उन की बात तो आप ने सुन ली, लेकिन मेरी नहीं सुनते हैं ।

अध्यक्ष महोदय : अगर वह हमेशा बीच में बोलते हैं तो आप भी चाहते हैं कि उसी तरह से बीच में बोलें ।

श्री बड़े : मैं हमेशा आप का कहना मानता हूं । आप कहते हैं तो बठ जाता हूं ।

अध्यक्ष महोदय : मैं खड़ा होता हूं और आप बोलते चले जाते हैं , यह मैं ने देखा है ।

श्री बड़े : आप मुझे जब बुलाते हैं तभी मैं बोलने के लिये खड़ा होता हूं ।

अध्यक्ष महोदय : अब भी मैं खड़ा हूं और आप बोलते जा रहे हैं, बठते नहीं हैं ।

श्री बड़े : लिमये साहब को तो आप . . .

अध्यक्ष महोदय: : उन को कई बार कह चुका हूं । लेकिन आप को भी कहता हूं कि यह दोष उन में ही नहीं है, आप में भी है । आप जब भी बोलना चाहते हैं खड़े हो जाते हैं और बोलते चले जाते हैं । इसलिये आप भी इस से बरी नहीं हो सकते हैं ।

श्री बड़े : कभी ऐसा नहीं किया है । एस० एस० पी० वाले करते हैं, हम ने कभी ऐसा नहीं किया है ।

अध्यक्ष महोदय : मैं आप से कह रहा हूं आप की पार्टी से नहीं । आप अपनी पार्टी को ले आए हैं कि हमारी पार्टी जो है . . .

श्री बड़े : मैं ने आप को कभी ऐसा मौका नहीं दिया है लेकिन लिमये साहब के साथ आप ने मेरा नाम भी जोड़ दिया है ।

अध्यक्ष महोदय : उन के साथ नहीं जोड़ना चाहता हूं । अलहदा मैं उसी दोष में लाना चाहता हूं । (इंटरप्शंज)

आपस में अगर झगड़ना है तो बाहर जा कर झगड़ें ।

12.03 hrs.

PAPER LAID ON THE TABLE

ANNUAL REPORT OF TRADE MARKS REGISTRY

The Deputy Minister in the Ministry of Commerce (Shri S. V. Ramaswamy): Sir, on behalf of Shri Manubhai Shah, I beg to lay on the Table a copy of Annual Report of the Trade Marks Registry for the year ending the 31st March, 1965, under section 126 of the Trade and Merchandise Marks Act, 1958. [*Placed in Library. See* No. LT-5189/65.].